लिखना ख़ंजर-सा धारदार दोहा!!

भारत भूषण आर्य

दोहा हिंदी का सबसे लघु , प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और प्रिय अर्द्धसम मात्रिक छंद है। संस्कृत के अनुष्टुप और आर्या जैसे लघु छंदों की तरह हिंदी में भी दोहा और सोरठा जैसे छंद प्रचलित रहे हैं। दोहा मूलतः एक लोक छंद है। प्राकृत पैंगलम् के अनुसार दोहा कविता का वह रूप है जिसके प्रथम और तृतीय चरण में तेरह-तेरह और दूसरे और चौथे चरण या पाद में ग्यारह-ग्यारह मात्राएं होती हैं। विषम पदों के यानी प्रथम और तृतीय चरण के आरंभ में जगण अर्थात लघु, गुरु, और लघु (1,2,1) मात्रा भार से बने शब्दों जैसे गुलाब, किताब, जहाज, बहार का प्रयोग वर्जित है। दूसरे और चौथे चरण के अंत में गुरु के बाद लघु (2,1) वाले सम तुकांत शब्दों का प्रयोग अनिवार्य होता है। साहित्य में दोहे के कुल तेईस भेद वर्णित हैं जो इस प्रकार हैं :- 1भ्रमर, 2 भ्रामर , 3 शरभ , 4 श्येन, 5 मण्डूक, 6 मर्कट , 7 करभ , 8 नर , 9 हंस, 10 गयन्द , 11 पयोधर , 12 बल , 13 बानर , 14 त्रिकल , 15 कच्छप, 16 मत्स्य ,17 शार्दूल , 18 अहिवर , 19 व्याल , 20 विडाल , 21 स्वान , 22 उदर , 23 सर्प

प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से आधुनिक काल तक समस्त मानवीय भावों, विचारों, संवेदनाओं, अनुभूतियों, वास्तविकताओं और युगीन संदर्भों की अभिव्यक्ति के लिए नन्ही- सी बूँद-सा लेकिन अपने में सात सागर समेटे दोहा ही एकमात्र सबसे मुफ़ीद छंद रहा है। अपनी इसी संप्रेषणीयता के कारण दोहा सबका लाड़ला और प्यारा छंद बना हुआ है।

आज हिंदी में दोहा ख़ूब ख़ूब लिखा जा रहा है। जिधर देखो उधर दोहा ही दोहा नज़र आता है। सौ-दो सौ दोहों की तो बात क्या, सैंकड़ों से हज़ारों और हज़ारों से लाखों तक एक ही रचनाकार दोहे लिख रहा है। दोहे की लोकप्रियता का आलम यह है कि उर्दू के शोअरा भी दोहे को उसी शिद्दत और मोहब्बत से कह रहे हैं जिस तरह हिंदी कवि ग़ज़ल पढ़-लिख रहे हैं। आज दोहा सिर्फ़ नीति, भक्ति, और श्रृंगार तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें जीवन-जगत् का प्रत्येक विषय समाहित है। भूख, ग़रीबी, बेबसी, राजनीतिक चक्र-दुष्चक्र , पाखंड, विडंबना, भ्रष्टाचार, घर, परिवार, समाज, रिश्ते, देश, राष्ट्र, भाषा , आतंक, सुख-दुख, संगति/ विसंगति, युगीन संदर्भों जैसे विषय - वस्तु को दोहे के माध्यम से बख़ूबी अभिव्यक्त किया जा रहा है।

क्या साधारण से दिखने वाले इस असाधारण छंद का रचना इतना आसान है? एक अच्छा दोहा लिखना वाक़ई कोई ख़ाला का घर नहीं है। चौबीस-चौबीस मात्राओं की मात्र दो पक्तियों में आपको पूरा भाव फ़लक समाहित करना होता है या यूँ कहें कि गागर में सागर भरना होता है। इसके अतिरिक्त यति, प्रवाह, लय और सही तुकांत का विशेष ध्यान रखना होता है। आपने दो पक्तियों में 13-11, 13-11 मात्राएं तो जैसे-तैसे करके बिठा दीं लेकिन क्या सिर्फ़ मात्राओं की पूर्ति कर देने भर से दोहा, दोहा हो गया? यक़ीनन नहीं!

अगर दोहा लिखना सचमुच इतना आसान होता तो क्या बिहारी जैसे समर्थ दोहाकार आमेर नरेश जयसिंह के यह कहे जाने के बाद भी कि हर नए दोहे पर एक अशर्फ़ी पुरस्कार स्वरूप दी जाएगी ताउम्र बामुश्किल केवल 700 दोहे लिख पाते? "बिहारी सतसई" हिंदी साहित्य की एक आदर्श सतसई मानी जाती है। और इन्हीं दोहों का दम पर बिहारी हिंदी साहित्य में सदा-सदा के लिए अमर हो गए।

उर्दू के मशहूर शाइर फ़िराक़ गोरखपुरी साहिब ने कहा था शे'र कहना कोई बड़ी बात नहीं, शे'र में बात पैदा करना बड़ी बात होती है। यही बात दोहे पर भी सौ फ़ीसदी लागू होती है। दोहा तभी दोहा होता है जब वह "घाव करे गम्भीर" या रहीम के इस दोहे:-

दोहा दीरघ अर्थ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चलि जाहिं।।

की कसौटी पर खरा उतरता है। जिस तरह शे'र में तग़ज़्ज़ुल का होना शे'र को शे'र बनाता है उसी तरह दोहे में अर्थपूर्णता, सांकेतिकता, प्रौढ़ता, संक्षिप्तता, व्यंजनात्मकता, लाक्षणिकता, संप्रेषणीयता, विषयगत विविधता एवं अलंकारिकता आदि गुणों का होना दोहे को दोहा बनाता है। कला और भाव दोनों दृष्टियों से दोष रहित दोहा ही वास्तव में बनता है एक ख़ंजर-सा धारदार ,प्राणवान और बिच्छू के डंक -सा डंकधार दोहा।

जिस तरह आज व्हाट्स अप, फेसबुक , और यहाँ - वहाँ दोहों की बाढ़ सी आई हुई है वहां ज़रूरी है दोहे की मारक क्षमता, दोहे के पैनेपन , और दोहे की आत्मा को बचाए रखने की । तभी सही अर्थों में दोहे और रचनाकार दोनों का भला हो सकेगा। वरना दोहा, दोहा होकर भी मृत समान ही रहेगा। सारांशतः अपनी एक कुण्डलिया के माध्यम से यही कहना चाहूंगा:-

दोहा पानी आँख का, दोहा मन की आस,

दोहा रंग कबीर का, दोहा तुलसी दास।

दोहा तुलसी दास, यही तो लाल बिहारी,

छोटा-सा मधु छंद , महासागर पर भारी।

कह भूषण कवि आर्य, कौन ले इससे लोहा?

दोहे के सौ रंग, दसों दिश दोहा! दोहा!